सुखी गृहस्थ जीवन

प्रवचन :

परम पूज्य महात्मा मंगतराम जी महाराज

श्री सद्‌गुरुदेव मंगतराम जी महाराज

(1903 – 1954)

विषय - सूची

1. दो शब्द.. 1-2

2. श्री सद्गुरुदेव का संक्षिप्त जीवन परिचय.............. 3-4

3. महामन्त्र , मंगलाचरण 5

4. प्रार्थना (शब्द) 6

5. गृहस्थ जीवन की श्रेष्ठता 7

6. पति (पुरुष) धर्म 11

7. पतिव्रत (स्त्री) धर्म 12

8. विवाह नीति 13

9. अन्तिम संस्कार नीति 20

दो शब्द

गृहस्थ जीवन महान है। इस में रहकर ही मनुष्य अपने पवित्र आचरण और शुद्ध व्यवहार द्वारा उस पदवी (स्थिति) को प्राप्त कर सकता है जिस को बड़े-बड़े सन्त महात्मा संसार त्याग कर, जंगलों में रह कर, कठिन से कठिन तपस्या करके भी प्राप्त नहीं कर पाते। जिस प्रकार एक साईकिल को चलाने के लिए दोनों पहियों को ठीक ढंग से रखा जाता है, ठीक उसी प्रकार गृहस्थ जीवन को अनकूल ढंग से चलाने के लिए स्त्री ओर पुरुष दोनों पहियों को मिल कर चलना पड़ता है। इस लिए गृहस्थ जीवन की गाड़ी को सुचारु रुप से चलाने के लिये मनुष्य को बड़े धैर्य, सहनशीलता इत्यादि कई प्रकार के शुभ गुणों को अपना कर चलना पड़ता है। मगर ऐसा तब ही सम्भव हो सकता है जब गृहस्थ जीवन की महानता का सही पता लग जाये। तमाम मजहब, धर्म, पंथ ईत्यादि इसी गृहस्थ जीवन के आधार पर चलते आ रहे हैं।

सितम्बर 1951 की बात है कि ब्रह्मवेता सदगुरु देव श्री मंगत राम जी महाराज देहरादून में विराजमान थे कि कुछ प्रेमियों ने गृहस्थ जीवन के सम्बन्ध में अपनी संशय निवृति चाही तो उनके शंका समाधान में सतपुरुष ने बड़े सुन्दर तरीके से गृहस्थ जीवन का महत्व बतलाते हुए फरमाया कि - गृहस्थी का जीवन एक महान तप है, जिस में से गुजरे बगैर गृहस्थ जीवन की पवित्र आधारशिला नहीं रखी जा सकती । पति-पत्नी का धर्म, समाज की मर्यादा का सम्मान, घरेलू जीवन में सुख शान्ति के साम्राज्य की स्थापना, देव रुपी सन्तान की उत्पति की इच्छा और दयावान और पर-उपकारी जीवन, ऐसी आधार शिला के भिन्न भिन्न अंग हैं, जिन का वर्णन श्री सत्गुरु देव ने अपने वचनों अथवा वाणी द्वारा किया है और जो इस पुस्तिका द्वारा भेंट किये जा रहे हैं, ताकि सर्वसाधारण गृहस्थ जीवन के महत्व को समझ कर अपना जीवन व्यतीत करें और उस परम उच्च पद को प्राप्त करें जो गृहस्थ जीवन की परम्परागत देन है।

वास्तव में गृहस्थी के लिये अशान्ति का कारण हमारे रीति रिवाज हैं, जिन में देखा देखी बढ़ोतरी होती जा रही है। परन्तु सदगुरु देव कहा करते थे :-

“दुनियावी (संसारी) रसमों रिवाज यानि शादी और मौत की रीति बिल्कुल साधारण तरीके से अमल में लानी चाहिये, क्योंकि यह ही स्वार्थ प्रपंच बढ़ा हुआ परमार्थ यानी इश्वरी विश्वास को नाश कर देता है। जिस से समता बुद्धि ममता में लैय (लीन) हो जाती है। जिस से जीव परम दुखी हो जाते हैं”।

इस अशान्ति से मुक्ति पाने और सुखी जीवन अपनाने हेतु गुरुदेव के विचारों पर आधारित विवाह की साधारण नीति और अन्त्येष्टी सम्बन्धी नीति भी इस पुस्तिका द्वारा प्रस्तुत की जा रही है, ताकि मानव मात्रा इस नीति को सांसारिक कार्यों में अपना कर फजूल खर्ची और आडम्बर के भार से मुक्त हो सकें।

संगत समता वाद हर गृहस्थी के लिये ऐसे ही पवित्र जीवन की शुभ कामना करती हैं।

''संगत समतावाद''

श्री सद्‌गुरुदेव महात्मा मंगत राम जी महाराज

संक्षिप्त जीवन परिचय

पूज्यपाद श्री सद्‌गुरुदेव महात्मा मंगतराम जी वर्तमान युग के जन्म सिद्ध सत्पुरुष हुए हैं। आपका जन्म मंगलवार दिनांक 9 मग्घर सम्वत् 1960 तदानुसार 24 नवम्बर, 1903 को शुभ स्थान गंगोठियाँ ब्राह्मणां, जिला रावलपिण्डी (पाकिस्तान) के एक कुलीन ब्राह्मण परिवार में हुआ। आप बाल-ब्रह्मचारी, पूर्ण योगी, परम त्यागी एवं ब्रह्मनिष्ठ आत्मदर्शी महापुरुष थे।

आप में 'स्थितप्रज्ञ' के समस्त लक्षण पूर्ण रूपेण घटते थे। 13 वर्ष की स्वल्पायु में आत्म साक्षात्कार कर लेने के पश्चात् आप सांसारिक प्राणियों का उद्धार करते रहे। देश और काल के अनुसार जहाँ कहीं भी आपने धर्म की मर्यादा को भंग होते देखा तथा सामाजिक नियमों के पालन में त्रुटि पाई, वहाँ पर ही धर्म की मर्यादा की संस्थापना की और सदाचारी जीवन बिताने का उपदेश देकर सामाजिक ढाँचे को विछृंखल होने से बचाने का प्रयत्न करते रहे।

आप अपनी मधुर वाणी और निर्मल विचारों द्वारा हर एक को प्रभावित कर लेते थे और सरल एवं सुबोध भाषा में आध्यात्मिकता के गम्भीर विषयों को सहज ही समझा दिया करते थे। आपने समता के सिद्धान्त का जगह जगह पर प्रचार किया और यह सिद्ध कर दिया कि समता सिद्धान्त को अपनाकर ही मानव संकुचित विचारधारा, साम्प्रदायिकता तथा जाति-पाति के बन्धनों से ऊपर उठ सकता है।

आपने सांसारिक प्राणियों को सत्शान्ति की प्राप्ति के निमित्त समता के पांच मुख्य साधनों :- (1) सादगी, (2) सत्य, (3) सेवा, (4) सत्संग और (5) सत् सिमरण को अपने निजी जीवन में ढालने का उपदेश दिया। सत् पर आधारित होने के नाते आपके सभी उपदेश विश्व कल्याण की भावना को अपने में संजोये हुए हैं। आपने भारत के भिन्न भिन्न क्षेत्रों का भ्रमण करके जहाँ रूढ़िवादों एवं अन्ध विश्वासों का खण्डन किया, वहां सत् के जिज्ञासुओं को समता का पावन सन्देश देकर उन्हें परमार्थ पथ पर आरूढ़ किया। आपकी वाणी का संग्रह ग्रंथ ''श्री समता प्रकाश'' और वचनों का संग्रह ग्रन्थ ''श्री समता विलास'' के रूप में प्रकाशित हो चुका है।

आप 4 फरवरी, 1954 को 50 वर्ष की आयु में अपने नश्वर शरीर का त्याग करके परम सत्ता में विलीन हो गये।

गुरुदेव का सदुपदेश

एक ईश्वर को कुल दुनिया का आधार मानना और नित आनन्द स्वरूप जानना और हर एक के अन्दर उसका प्रकाश देखना, तमाम कर्मों के फल की वासना ईश्वर निमित्त त्याग करना, हर वक्त दीन भाव को धारण करना, सब जीवों का हितकारी होना, मन, वचन, कर्म से सबका भला चाहना, अपने शरीर के मद का त्याग करना, हर एक गुणी पुरुष का सत्कार करना, हर वक्त अपने जीवन उद्धार की खातिर यत्न धारण करना, नाशवान् शरीर से जीवित में ही उपरस हो जाना और आत्म आनन्द में हर वक्त मग्न रहना, यह धारणा ही असली धर्म है। इसको प्राप्त करके जीव सम भाव ब्रह्म शब्द में लीन हो जाता है, जो सब संसार का मूल है और आनन्द धाम है।

(ग्रंथ 'श्री समता विलास' से)

।। महामन्त्र ।।

ओ३म् ब्रह्म सत्यम् निरंकार

अजन्मा अद्वैत पुरखा सर्व व्यापक

कल्याण मूरत परमेश्वराय नमस्तं

।। मंगलाचरण ।।

नारायण पद बंदिए , ताप तपन होये दूर,
नमो नमो नित चरण को, जो सरब आधार हजूर ।

हिरदे सिमरो नाम को , नित चरणी करो दण्डौत,
सत श्रद्धा से पूजिये , रख सत्गुरु की ओट ।

दुविधा मिटे मंगल होये , जो चरण कंवल चितधार,
रिद्धि सिद्धि आवे घर माहीं , पावें जय जय कार ।

साचा ठाकुर सरब समराथा , अपरम शक्त आपार,
'मंगत' कीजे बन्दना , नित चरणी बलिहार ।

सत मारग सोझी मिली , तन मन भया निहाल,
गवन मिटी संसार की , सत्गुरु मिले दयाल ।

बार बार करुँ बन्दना , सत्गुरु चरणी माहीं ,
''मंगत'' सत्गुरु भेंट से , फेर गर्भ नहीं आई ।

“प्रार्थना”

करने हार तूं ठाकुर मेरा । पल-पल राखें चरणी केरा ।।
तूं दुख हर्ता मंगलकारी । तोरी महिमा अपरम अपारी ।।
खल बुद्धि मैं अनमति मूढ़ा । कह बिध सिमरां तुद नाम हजूरा ।।
अधिक विकार भरे दुःखदाई । तुम बिन मेरा नहीं कोई सहाई ।।
बुद्धिहीन मन अति मलीना । तुम बिन रखयक नहीं कोई दरसीना ।।
अत ही नीच औगुण को धारी । तुम बिन मेरा नहीं कोई रखवारी ।।
दुष्ट विकार चित धरे घनेरे । आवागवण फिरावें फेरे ।।
कह बिध छूटाँ प्रभु दीनदयाला । ना कोई जतन न ज्ञान विशाला ।।
ना कोई मारग सोझी आवे । तुद बिन थाओं नहीं कोई दिखलावे ।।
बारम्बार यह किया विचारा । बन्ध छुड़ावे तुद नाम अपारा ।।
बुद्धिहीन नहीं उस्तति पाऊँ । कह विध प्रीत तोरे चरण कमाऊँ ।।
शेष सहंस मुख जो नित गाई । पल-पल विरंच मन ध्यान लगाई ।।
शिव सनकादिक विषण विचारी । लोमस जुग जुग प्रीत निहारी ।।
तेरी महिमा का पाया नहीं पार । अनमति मूढ़ा क्या करे विचार ।।
साची प्रीति प्रभु चरणी दीजो । साची कीरत प्रभु मन में सीजो ।।
अपना तेज आपे परगासो । पल पल चरणी करूँ अरदासो ।।
ना तप बल ना विद्या कोए । ना विचार चित्त घना लखोए ।।
केवल किरपा तोरी विचारां । पल पल तेरा नाम निहारां ।।
अपनी मेहर आपे वरताओ । मूढ़े जीव को सूझ लखाओ ।।
ध्रुव प्रहलाद गुणी बहु तारे । नामदेव रविदास उद्धारे ।।
पीपा सैना की प्रीत बढ़ाई । कबीर, दादू, नानक तराई ।।
कोटां कोट प्रभु किये उद्धार । गिनती लेख नहीं पाऊँ शुमार ।।
सिद्ध ऋषीश्वर जुग जुग गायें । पतित पावन करके नित ध्यायें ।।
सच्चिदानन्द तूं नित किरपाला । मूरख जन्त का तूं रखवाला ।।

सरब जगत को छाड के , तुद दर धूड़ रमाऊँ ।
''मंगत'' दीनदयाल प्रभ , मत कित दर्शन पाऊँ ।।

(ग्रंथ श्री समता प्रकाश)

सितम्बर 1951 देहरादून

गृहस्थ जीवन सर्वसमाज, धर्म और पंथों की बुनियाद

प्रश्नः महाराज जी ! गृहस्थ धर्म की बाज़ (कई) सन्त जन निन्दा करते हैं, हालांकि बिना गृहस्थ के वोह भी संसार में शरीर लेकर उत्पन्न नहीं हो सके ?

उत्तर : प्रेमी, तुम्हारा कहना ठीक है, कई त्यागी महान पुरुषों ने ऐसा कहा है कि गृहस्थ आश्रम में रहकर पूरी तरह साधना सम्पूर्ण नहीं हो सकती। बहुत हद तक उनका कहना ठीक है। छोटी बुद्धि वाले बारम्बार माया मोह में भटक जाते हैं। इस से परे रहकर ही अच्छी तरह उन्होंने साधना करके तब ऐसा कहा है। स्त्री, पुत्र और चीजें कोई दोष युक्त नहीं हैं। अपना जीवात्मा ही दोषी रहता है। उसके अपने अन्दर सत्त की परिपक्वता हो तो कोई चीज उसे दुख नहीं दे सकती। गृहस्थ में रहते हुए बड़े-बड़े भक्त, ऋषि, गुरु और सन्त भी हो गुजरे हैं। गृहस्थ आश्रम की श्रेष्ठता से पहले अच्छी तरह वाकिफ होना चाहिए। गृहस्थ आश्रम के इसे छोटे से नियम की कितनी महानता है। फरमाते हैं :-

‘‘जो गृहस्थी अपने माता, पिता, पुत्र, स्त्री और आये गये अतिथि को भोजन कराये बिना खुद (स्वयं) भोजन कर लेता है वह पाप का भागी बनता है। ‘‘मुहम्मद’’ ने कहा है ‘‘अपने खाना खाने से पहले आस-पास, पड़ोस में कोई भूखा प्यासा देख ले, तब खुद खाना खायें।’’ गृहस्थ का जीवन मशरक (पूर्व) से लेकर मगरब (पश्चिम) तक एक जैसा ही है। कोई न अपनाये तो उसकी मर्जी। स्त्री पुरुष को अपने अपने धर्म पर डटे रहना चाहिए। स्त्री का धर्म है पति की हर तरह की सेवा का ख्याल रखना। पति का धर्म अपना है। हर तरह की जरूरयात पत्नी की बगैर कहे सुने, पवित्र कमाई द्वारा पूरी करना। फिर उनकी आगे जो औलाद होगी, वो भी सुपात्र होगी। गृहस्थ धर्म ठीक तरह तब ही पालन कर सकोगे। शुरु से बा-तरीका चलना होगा। माता पिता को चाहिये कि चार पांच वर्ष तक अच्छी तरह औलाद से लाड प्यार कर ले। फिर किसी नेक गुरु, उस्ताद द्वारा अच्छी तालीम का बन्दोबस्त करवाना चाहिए। तालीम के बाद गुजरान के लिए अच्छे गुण धारण करने चाहिए जब किसी काम धन्धे के लायक औलाद हो जाये, तब बराबर का समझ कर उनके साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करें। तब

गृहस्थ स्वर्ग रूप बनने लगेगा। गृहस्थ में रहते हुए सब का ख्याल रखना पड़ता है। जिस कदर सम्बधी मित्र नौकर चाकर हों सब का नियम अनुसार पालन पोषण करने वाला ही नेक गृहस्थी माना जाता है। फिर इस से परे उठकर पड़ोसियों, ग्रामवासियों, देशवासियों और दीन, दुःखी, अनाथ, अभयागत का ख्याल रखने वाला गृहस्थी श्रेष्ठ आचारी माना गया है। जो गृहस्थी हर प्रकार की सम्पत्ति रखता हुआ गरीब, यतीम, अनाथ और दुखी जनों की सेवा नहीं करता उस में और पशु में कोई अन्तर न समझो। सेवादार गृहस्थी अपने खाने पीने लगाने का चाव नहीं रखता। वह दूसरों की सेवा करके प्रसन्न रहता है। कहां तक सुनोगे, गृहस्थी से ही विरक्त बनते आये हैं। मर्यादा में सब काम करने वाला गृहस्थी ही देवता के समान है। मोटी बात, जब तक कामना रूपी रोग लगा हुआ है तब तक गृहस्थी हैं। जो सब कुछ होते हुए निर्चाहक है वह विरक्ति है।

प्रश्न : महाराज जी ! हम सब बिना विचार के ही गृहस्थ की गाड़ी चलाये जा रहे हैं। इसी वास्ते दुख उठा रहे हैं ?

उत्तर :- प्रेमी जी गृहस्थी को भी पूरा तप करना पड़ता है। गृहस्थी वास्तव में सर्व समाज, धर्म, पंथों की बुनियाद है। बड़े-बड़े तपी, जपी इस के दरवाजे पर भिक्षा लेने आते हैं। गृहस्थ धर्म पूरी तरह निभाने वाला ही श्रेष्ठ माना गया है। गृहस्थी को होशियार होकर विचरना पड़ता है। दुशमन के साथ किस तरह बर्ताव करना है। मित्रों के साथ, सम्बन्धियों के साथ और दीन दुखी अनाथ के साथ, दीगर अपने धर्म, समाज के साथ बर्ताव जानने वाला सदा सुखी रहता है। ईश्वर को सदा सत जाने, संसार को झूट समझ कर हमेशा मर्यादा में सब कर्म करें, क्योंकि दूसरे संसार में प्रभावशाली सज्जनों से सम्बन्ध रखकर ही खुश रहते हैं। हर व्यक्ति को पवित्र व्योहार द्वारा धन एकत्र करना चाहिए। हर ईल्म अच्छी तरह सीखना चाहिए। धर्म परायण जीवन बनाते हुए खोटे कर्मों का हर समय त्याग करते जाना चाहिए। कभी फजूल बोल बोलना नहीं चाहिए। धर्म की कमाई द्वारा अनेक जीवों का पालन पोषण होता है। धन इस वास्ते नहीं कमाना कि हर समय भोगी जीवन बना रहे, वैसे हर जीव धन दौलत चाहता है, मगर कमाई करने में होशियार नहीं होते। पंजाबी कहावत है ''कर मजदूरी ते खा चूरी'' अच्छी तरां संसार में विचरना है तो अच्छी तरां कमाई करके भलाई

और अपने जीवन निर्वाह में खर्च करें। गृहस्थी की महिमा अवतार करते आये हैं। राजा मोर ध्वज का जब श्री कृष्ण ईम्तहान लेने जाते हैं, उसे अपने पुत्र को उन के कहने के मुताबिक (अनुसार) भेंट शेर के वास्ते कर दिया। जब परीक्षा पूरी तरहं की हो चुकी है, तब भगवान ने भोजन के समय पुत्र को आवाज मारने के वास्ते कहा, आखिर जब आवाज दी गई, बालक हंसता हुआ अन्दर से आ गया। तब राजा को सब हाल पता लग जाता है। उसने प्रार्थना कर वर मांगा कि महाराज आईन्दा ऐसा इम्तहान किसी गृहस्थी का न लेना। गृहस्थ का मार्ग अति कठिन है। जिस गृहस्थी के दर से किसी किसम का कोई याचक खाली जाता है तो वह उस के शुभ कर्म ले कर विदा होता है, पाप कर्म दे जाता है। इस वास्ते अगर किसी की सेवा न बन सके तो खाली हाथ ही जोड़ देवे। धनी गृहस्थी संसार के थम्बे होते हैं। जिस कदर मठ, मन्दिर, शाला, अतिथि अनाथालय हैं, सब गृहस्थीयों के सिर पर चल रहे हैं। गृहस्थ में कुछ न कुछ नेक कर्म जीव करता रहता है। बाकी ज्ञानियों, सन्तों का मार्ग अलग है। केवल आत्म तत्व बोध के लिए उनका प्रयत्न रहता है। चाहे संसार में रहकर प्राप्त करें या जंगल में जाकर, वोह किसी के वास्ते दुखदाई नहीं होते। संसारी खुद तन मन धन भेंट कर सफल मानते हैं। गृहस्थ आश्रम में विचरने वाली पोथी पढ़ो। देखो एक गृहस्थी सब कुछ प्राप्त करके प्रभु को जानता है और दूसरी तरफ एक विरक्ति किसी कोने में बैठा हुआ होना न होना प्रभु आज्ञा में देख रहा है। दोनों ही कल्याणकारी हैं। अपनी-अपनी जगह दोनों ही सीधे रास्ते पर चल रहे हैं। इन पांच असूलों को यानि सादगी, सत्य, सेवा, सत्संग, सत सिमरन को अच्छी तरह समझ कर इन को अपना लोगे तो कभी भी किसी सत कर्म करने में न हानि होगी, न आलस्य आयेगा। सन्यासी भजन तप सिमरण करते हुए उच्च्व अवस्था को प्राप्त होते हैं और गृहस्थी निष्काम सेवाओं को करते हुए परम पद के नजदीक जाते हैं। अच्छे से अच्छे करम करने वाला ही कर्म योगी होता है। हर एक व्योहारी का अपना अपना धर्म है। सिपाही का और धर्म है। मालिक का और धर्म है। जज का और धर्म है। जो जो जिस काम में लगा हुआ है उसे पवित्र रूप में करने वाला सत्यागृही है। बड़े बड़े शास्त्र ऋषियों ने रच रखे हैं। कौन जीव किस तरह विचरन करके निर्भय अवस्था को प्राप्त हो सकता है। कमजोरी हर पाप कर्म को प्रकट करती है। फकीरों के पास ज्यादा न बैठा करो। सुनते-सुनते बोर हो जाओगे। अमल करोगे तो पार हो जाओगे। बहादर वही है जो संसार में रहते हुए आत्मदर्शी बनता है।

बहुत जीव बिना सोचे समझे संसार को छोड़ कर दरिद्री, आलसी, मांगने वाले बन जाते हैं। वह ना संसार के योग्य रहते हैं, प्रभु प्राप्ति तो है ही दूर। जन्म जन्मान्त्र के लिए परम तत्व बोध से बिछुड़ जाते हैं। प्रेमी जी ! जिसने अपना कुछ संवारना होता है, वह बहुत जगह जगह पूछता नहीं रहता। हर जीव अपना अपना कर्त्तव्य जानता है। फर्ज समझता है। चलने वाले को राह मिल जाती है। ईश्वर सुमति सब को बखशे।

प्रेमी : महाराज जी ! यह भी बड़ा तप है ?

महाराज जी : तुम ने क्या समझा ! परिवारी ऐसे मुक्त हो जाते हैं। हर आश्रम मैं जीते जी मरना पड़ता है। प्राचीन समय में ऋषि आश्रमों से हर प्रकार की विद्या सीख कर संसार में विचरते थे। जो अति विचारवान विवेकी होते थे, वोह जंगलों में अलग जाकर आत्म बोध का यतन करते थे। जो जरा संसार की चहल पहले देखना चाहते थे, गृहस्थ आश्रम अख्तयार करके सुथरी तरह बीस तीस बरस संसार के सुखों दुखों को देखकर सार तत्व की प्राप्ति के वास्ते बान प्रस्थी हो जाते थे। बान प्रस्थी भी थोड़ा संसार से चमड़े रहते हैं। सन्यासी अवस्था में बिल्कुल अतीत रह कर निर्वास अवस्था के लिए यतन करते थे। आज कल सारी ताणी ही बिगड़ी हुई है न गृहस्थी वोह रहे न सन्यासी। खास-खास कोई विरले आनन्द मई हालत को बोध कर पाते हैं। इस वास्ते ''कबीर'' ''नानक'' आदि सन्तों ने उस तालीम का प्रचार किया, जिस से गृहस्थ में रहते हुए अपनी अपनी जीवन यात्रा को पवित्र करते जावें। जिस की मर्जी अतीत बनने की हो वेशक फकीरी बाणां में विचरे। समय-समय पर नियम बदलते रहते हैं। आत्म तत्व बोध के बिना किसी काल में खुलासी नहीं होती। आत्म विवेकी से अपने आप ही सब कुछ छूटता जाता है। फी जमाना अर्थात आजकल में लैक्चर बाजी बढ़ रही है। कुवते गोयाई (बोलने की शक्ति) में ताक है। उस की जय जय कार कुछ दिन जरूर होगी। लेकिन तप त्याग के बिना सब थोथा ही है। इस लिए अधिकतर अर्न्तमुख होने का यतन ही सर्व काल श्रेष्ठ रहता है। ईश्वर ही आज कल की जनता को सही मत बखशे। चिकनी चुपड़ी जितनी सूरतें हैं बातें बनाने में खूब माहिर हैं। करना धरना कुछ नहीं। जमाना ऐसा चतुर हो गया है श्रद्धा विश्वास उठता जा रहा है। बाल की खाल उतारते हैं। प्रेमी ! इस कदर विचारों के बाद कुछ इन प्रेमियों के चित धर्म मार्ग की तरफ चल पड़े, इधर आना सफल हो जावे।

गृहस्थ जीवन में
स्त्री पुरुष जीवन सम्बन्धी धर्म

(गृहस्थ जीवन को सुख मई और शान्त मई बनाने के लिए पति पत्नी दोनों के लिए सत पुरुषों की शिक्षा अनुसार गृहस्थ जीवन के महत्व को समझ कर मर्यादा अनुकूल चलना ही लाभदायक है)

पति (पुरुष) धर्म

सदाचारी मन सुशील, गुरु भगत नित होय ।
एक प्रभु का राखे विश्वासा, नित निर्मल करम पिरोये ।।

गृहस्थ धर्म का पालन करे, नित साची नीति धार ।
गुरु बचन में प्रीत रखे, निर्मल सुने विचार ।।

अपनी देह का अंग नित, निज नारी को जाने ।
धर्म युक्त होये सेवा करे, यह नीति सार पछाने ।।

पर नारी सम मात पछाने, नित संगत साची धारे ।
आहार पवित्र, विचार नित निर्मल, नित साचा करे व्यौहारे ।।

मात पिता की आज्ञा माने, नित चित से सेवा कीजे ।
पर उपकारी जीवन राखे, सरब जीयां सुख दीजे ।।

सादा जीवन नित ही राखे, प्रभु चरनी प्रीत विचारे ।
आज्ञा प्रभ में सब कुछ देखे, दृढ़ निश्चा यह धारे ।।

धर्म युक्त परिवार बनावे, नित साची रहनी रहाये ।
दीन दुखी की सेवा कीजे जग जीवन सार लखाये ।।

कठिन मार्ग यह गृहस्थ का मीता,जो धर्म सहत नित धाई ।
''मंगत'' देव स्वरुप सो जग में, नित पावे सुख अधिकाई ।।

पतिव्रत (स्त्री) धर्म

पतिव्रत के धर्म को, जो तिरिया पाले नीत ।
पूर मनोरथ तिस के, जो धारे सत प्रतीत ।।

प्रभु सरुप सम जान के, निज पति पूजे जो नार ।
सत आज्ञा नित पालन करे, नित राखे सत आधार ।।

पति कुटुम्ब की दासी होवे, प्रेम से सेव विचारे ।
शर्म पत पूरन चित राखे, नित निर्मल बचन उचारे ।।

गृह धर्म का पालन करे, अति प्रीति को धार ।
सत संगत से प्रीत करे, नित राखे चित उपकार ।।

सत धर्म का जीवन पावे, सो सतवन्ती नार ।
अधिक सुख प्राप्त होवे, देव पाये परिवार ।।

नित सत वादी, नित पर उपकारी, नित सादा रहनी धारी ।
पति आज्ञा में तन मन अरपे, पावे पति व्रत सो नारी ।।

जग जीवन होये देव समाना, यश कीरत बहु पाई ।
''मंगत'' माता जगत की, सो नारी नाम धराई ।।

‘विवाह नीति’

1- दुनियावी रस्मों-रिवाज यानि शादी और मौत की रीति बिल्कुल साधारण तरीके से अमल (प्रयोग) में लानी चाहिए, क्योंकि यह स्वार्थ कर्म का ज्यादा प्रपंच, परमारथ यानि ईश्वरीय विश्वास को नाश कर देता है। जिससे समता बुद्धि मलीन हो जाती है और जीव परम दुःखी होता है।

2- समता-मार्ग में दुनियावी रस्मों रिवाज को बिल्कुल साधारण करना और शुद्ध रीति वाली रस्म बर्ताव में लाना लाजमी है। दीगर तमाम तोहमात का त्याग लाजमी है।

3- पुरातन समय में जो जो रीति रिवाज ऋषि-मुनियों द्वारा बनाये गये थे वे बहुत ही सादा रुप में थे। ज्यों ज्यों जमाना बदलता गया लोगों के हालात और विचार भी बदलते गए। सरलता और सादगी की जगह नुमाइशी हालत को धारण करके जीव आप ही दुखी हो जाया करते हैं। चिन्ताओं फिकरों से छुटकारा पाने के लिए मर्यादा और सादगी को धारण करना चाहिए। इस समय कई रीति रिवाज जीवों के वास्ते अजाब (दुःख) बने हुए हैं। उनमें से एक रस्म शादी (विवाह) है। आसान और सादा तरीका अपनाकर इस शुभ कारज को सम्पूर्ण कर देना चाहिए।

(महात्मा मंगत राम जी)

1- माता पिता का कर्त्तव्य बच्चों के प्रति

1- सबसे पहले औलाद को सदाचारी जीवन में रहने की हर समय हिदायत (शिक्षा) करते रहना चाहिए। खाना ऐसा पवित्र खिलाया जाए जिससे शारीरिक सेहत बनती जावे। पढ़ाई जिस कदर हो सके करवानी चाहिए। जिससे संसार का कारज भी चल सके और परमारथ की राह का भी पता लगता रहे। नुमाइशी जीवन की तरफ से रोकते रहें। लड़की को इतना जरुर पढ़ाया जाए जिससे धर्म सम्बन्धी ग्रन्थों का अच्छी तरह विचार कर सके।

2- जब लड़की लड़का बालिग हो जाएं तो वालदैन (माता-पिता) को चाहिए कि अच्छी तरह विचार करके गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करवा दें।

2- सम्बन्ध जोड़ने के प्रति

1- वालदैन (माता-पिता) लड़की वाले या लड़के वाले दोनों मिलकर लड़के/लड़की के स्वभाव से अच्छी वाकफियत हासिल करें। उनके बोल-चाल, सूरत कद्दो-कामत देखभाल कर प्रेमभाव वालदैन (माता-पिता) समझ लें। क्योंकि हर इन्सान चाहता है कि बहु और दामाद अच्छा मिलें।

2- लड़का बारोज़गार जरुर होना चाहिए। चाहे माता पिता का धन-सामग्री बहुत क्यों न हो। लड़की घरेलू काम काज से अच्छी तरह वाकिफ हो और धर्म सम्बन्धी ग्रन्थों का विचार करने वाली हो।

3- लड़के से लड़की उम्र में पांच सा सात साल तक का फर्क देखकर (यानि छोटी हो) लेनी चाहिए। लड़का उम्र में 25 साल तक कम न हो। दोनों तरफ के वालदैन (माता-पिता) देख सुन कर जब अच्छी तरह राजी हो जावें, तब सम्बन्ध (सगाई) को पुख्ता (पक्का) करने के वास्ते वचन लेने देने के लिए एक दिन मुकरर कर लें। उस रोज के लिए सत्संग का प्रोग्राम बनाकर अपने सम्बन्धियों और मिलने वालों को एकत्र कर लें।

3- सगाई

1- अगर लड़के के घर लड़की वालों ने आना हो तो प्रसाद में मिलकर हिस्सा लें। लड़के वालों ने लड़की वालों के यहां जाना हो तो जैसा मुनासिब समझे करें।

2- दोनों तरफ के प्रेमी पहले मिल कर सत्संग के प्रोग्राम को सम्पूर्ण कर लें। फिर लड़की वाले जो बुजुर्ग साथ लाये हों आगे होकर, लड़के को पास बिठा कर महामंत्र (यानि ईश्वर स्तुति) का उच्चारण करें और थाल में साथ लाई हुई सामग्री (सवा सेर गुड़ या मिठाई, सवा रुपया, पांच अदद छुहारे, जनेऊ, संदूर, हार) इत्यादि चीजों में से संदूर का तिलक लड़के को लगाकर मीठा खिला कर हार डाल दें और महामंत्र सम्पूर्ण करके प्रसाद बांट दे। उस समय कोई लेन देन का सिलसिला बिल्कुल न करें। कोई दिखलावे वाली बात नहीं होनी चाहिए। इस सिलसिले को सिर्फ बात (वचन) को पक्का करने के लिए किया जाता है। उस रोज से दोनों परिवारों के दरमियान अधिक प्रेम भाव बढ़ जाना चाहिए दोनों में कोई भिन्न-भेद नहीं रहना चाहिए। जो सलाह मशवरा करना हो मिल कर करना चाहिए।

4- मांग

1- लड़के को और लड़के के वालदैन (माता-पिता) को लड़की वालों से किसी चीज की चढ़ कर मांग नहीं करनी चाहिए। हर तरफ से फजूल खर्ची वाले रिवाज को बिल्कुल बन्द कर देना चाहिए। लड़के के वालदैन जो हमराज (साथ) मेहमान लावें उनकी पवित्र आहार द्वारा सेवा कर देनी आवश्यक है।

5 - शादी

दोनों तरफ के चौधरी (बुजुर्ग) शादी का दिन मिल कर निश्चित करके जिस जिस को मुतला (सूचना) करना हो कर दें। और उस रोज खुली जगह पर सत्संग का प्रोग्राम बना लें। लड़की-लड़के वाले एकत्र हो जावें। सत्संग का समय छः सात बजे से लेकर आठ नौ बजे तक होना (यानि बारात सुबह के समय ही आवे) पाठ करने वाले के एक तरफ मर्द दूसरी तरफ औरतों का इन्तजाम होना चाहिए। लड़का लड़की और उनके वालदैन (माता पिता) पाठक के सामने ही थोड़ी दूरी पर बैठें। सत्संग में महामंत्र और मंगलाचरण के उच्चारण के बाद केवल ईश्वर प्रार्थना का दोहरा शब्द आपस में मिल कर उच्चारण करें। फिर एक शब्द (नं० 993 जो पृष्ठ 781-782 पर है) प्रेम से पढ़ कर अच्छे समझदार प्रेमी से खोल कर स्वार्थ परमार्थ के दोनों पहलूओं पर विचार समझाया जावे। सांसारिक, परमारथक दोनों रास्ते किस तरह तय किये जाते हैं। इस शब्द के बाद स्त्री पुरुष का अलग-अलग धर्म अच्छी तरह पढ़ कर लड़के/लड़की को सम्बोधित करते हुए समझाया जावे। बाकी सब सुनने वालों को भी स्त्री-पुरुष धर्म की याद दहनी (स्मरण) हो जायेगी। इस शब्द के बाद लड़के/लड़की से बारी बारी तीन तीन बार प्रण लेना चाहिए कि:-

1- सतगुरु महाराज जी की इस शिक्षा के अनुकुल ही जीवन यात्रा व्यतीत की जावेगी - यानी इन वचनों के अनुसार ही जीवन ढालने का यत्न करेंगे। हर रोज इस शिक्षा को पढ़कर अमल करेंगे (स्त्री-पुरुष धर्म की शिक्षा छपी हुई प्रसाद के रुप में दोनों को दी जावे)

2- जब लड़का/लड़की प्रण ले चुके तब लड़की के वालदैन (माता पिता) या भाई, सम्बन्धी लड़की को उठावें। लड़के को भी इसी तरह उस जगह सामने खड़ा कर देवें। लड़की द्वारा पहले नमस्कार करवा कर फिर फूलों की जयमाला बनी हुई लड़के को डलवा देवें। लड़की से कहलवायें।

"आज से दासी आपके सुपुर्द है हर तरह से आपने आज से मेरा ख्याल रखना होगा।"

3- फिर लड़के से भी फूलमाला डलवायें और कहलवायें, "आज से श्री महाराज (सतगुरु देव) की आज्ञानुसार चल कर मिल कर जीवन यात्रा सफल बनायेंगे।"

4- जिस समय फूल मालायें डालनी शुरु की जावें उस समय सब संगत महामंत्र का उच्चारण शुरु करें। जब लड़का फूलमाला डाल चुके तब महामंत्र सम्पूर्ण करें और लड़के और लड़की को वहां पर इक्ट्ठा बिठा दें।

5- इसके बाद ईश्वर महिमा के शब्द (482-483) प्रेम से पढ़ कर आरती और समता मंगल का उच्चारण कर सत्संग को समाप्त कर दें। प्रसाद संगत में तकसीम (बांट) कर दिया जावे। बाद में आये हुए मेहमानों को वहां ही दूध चाय दे देनी चाहिए। लड़के लड़की को घर में दाखिल करा दें।

6- सत्संग का प्रोग्राम प्रातः छः-सात बजे से लेकर नौ-दस बजे तक रहना चाहिए। बाद में मेहमानों को लंगर खिला कर शाम को चार बजे लड़की को विदा कर देना चाहिए।

नोट :-

1- लड़के वालों को चाहिए कि उस रोज केवल लड़की को हमराह (साथ) ले जावें। लड़की वाले जो कुछ दे उसको बिल्कुल गुप्त रुप में साथ ले जावें या बाद में किसी वक्त ले जावें।

2- लड़की वाले जो कुछ दें बिल्कुल गुप्त रुप में दें। सिवाय घर के सम्बन्धियों के किसी को न दिखावें। अर्थात् दहेज की नुमाइश बिल्कुल नहीं करनी चाहिए।

3- लड़के वालों को चाहिए कि कम से कम लेने की कोशिश करें।

6- बारात :-

लड़के वाले अपने हमराह (साथ) पांच मेहमानों को लाकर भी इस कारज को सम्पूर्ण कर सकते हैं। ज्यादा से ज्यादा पच्चीस व्यक्ति हो जावें। कोई भी व्यक्ति इस प्रोग्राम के मुताबिक चलने वाला हो तो बड़ी इज्ज़त के साथ उसका आदर मान करें।

7- लंगर :-

शादी के रोज लंगर जो हो उसमें पांच से सात चीजों तक ही सीमित लंगर होना चाहिए।

1- रोटी/पूरी

2- हलवा /खीर

3- चावल

4- दाल

5- सब्जी

6- पापड़

7- आचार इत्यादि

ऐसे यज्ञ में कोई अपवित्र वस्तु आहार में शामिल न हो ।

दोनों तरफ के वालदैन (माता पिता) तथा समाज के लिए हिदायत

1- लड़के वाले अमीर हों तो उनको चाहिए जहां तक हो सके गरीब घर की सुशील लड़की से सम्बन्ध करने की कोशिश करें। लड़की वाले अमीर हो तो वो भी ऐसी कोशिश करें कि अच्छे पढ़े-लिखे सुशील किसी गरीब लड़के को सहारा देकर खड़ा करने की कोशिश करें। ऐसे सम्बन्ध करने से आपस में अधिक प्रेम बढ़ता है और संसार में मिसाल कायम होती है। किसी को ऐसा कारज करने में तकलीफ नहीं होती ।

2- सिर्फ शादी के कारज को सम्पूर्ण करने के लिए अगर लड़के वाले या लड़की वाले कमज़ोर माली हालत में हो तो दोनों मिलकर इस (कारज) को सम्पूर्ण कर सकते हैं । कमज़ोर तरफ को चाहिए कि निष्काम भाव से इस कारज को सम्पूर्ण करें।

3- अगर दोनों लड़की/लड़के वाले कमजोर हों तो संगत को चाहिए मिल कर ऐसे कारज को सम्पूर्ण कर दें।

4- अगर शादी के रोज लंगर में पांच से लेकर बीस या पच्चीस व्यक्ति तक गरीब, यतीम की उसी लंगर से सेवा हो जावे तो बहुत बेहतर है।

5- शादी के प्रोग्राम को पांच से दस प्रेमी भी मिल कर सम्पूर्ण कर सकते हैं। अगर सत्संग के लिये खुली जगह का इन्तजाम किसी से न बन सके तो शहर या गांव के आश्रम में इस शुभ कारज को प्रेमी और दोनों तरफ के परिवार एकत्र होकर कर देवें।

6- अगर लंगर करने की ताकत लड़की वालों में न हो तो सब प्रेमी मिल कर ऐसे कारज को सम्पूर्ण कर दें क्योंकि यह भी एक यज्ञ होता है।

7- सत्संगी प्रेमी गुरुमुख के वास्ते गुरुमुखों को ही अपनी बिरादरी समझें। लड़की सुशील और लड़का सदाचारी, बारोजगार, मेहनती होना चाहिए। अगर जात बिरादरी वालों से ही अच्छा सम्बन्ध मिल जावे तो कोई पाबन्दी नहीं है। केवल रस्म शादी सत्संग करके सम्पूर्ण कर दें। प्रसाद लेकर चाय पीकर ही सब विदा हो सकते हैं।

अन्तिम संस्कार नीति

1- जो मनुष्य शरीर छोड़ने वाला हो उसके इर्द-गिर्द बैठ कर महामंत्र का जाप करना चाहिये।

2- स्वास के होते हुये चार-पाई से उतारने की कोई जरुरत नहीं। जब प्राण निकल जावें फिर ज़मीन पर मृतक शरीर (लाश) को रख दिया जावे।

3- महामंत्र का जाप करके मृतक शरीर (लाश) को शमशान भूमी में ले जावें।

4- अश्नान करा कर महामंत्र का जाप करके नीचे मृतक शरीर (लाश) को रख दिया जावे और महामंत्र का जाप करके अग्नि लगाई जावे।

5- जब संस्कार हो जावे तो महामंत्र का जाप करके अश्नान करके (या मुंह धोकर) सहित बरादरी वापिस लोटें।

6- घर में सब बरादरी ईश्वर की अरदास करे और रात को जीवगति सिद्धान्त के एक एक अंग का हर रोज सत्संग होवे।

7- चौथे दिन महामंत्र का जाप करके सब अस्थियां और राख को इकट्ठा करके किसी निकट बेहते पानी में डाल देवें। ख्वाहे दरया हो या किसी नाले में अगर (यदि) पानी नजदीक न होवे तो जमीन में किसी जगह दबा दें। और समझे कि धरती की चीज धरती के हवाले।

8- ग्यारहवें दिन इसब तोफीक (शक्ति अनुसार) दान करके पांच आदमियों से बीस आदमियों तक रोटी खिलानी जाईज (अनुकूल)है। इस के बाद बिस्तरा बगैरा अगर देना होवे तो जाईज इस्तेमाल वाली जगह (अर्थात् अधिकारी को) दिया जावे ।

9- ग्यारहवें दिन सुबहा दो घन्टा सत्संग होवे और समाप्ति पर थोड़ा प्रसाद बांट देवे ।

नोट :-

1- अगर किसी की मर्जी हरिद्वार जाने की हो तो खास मजबूरी नहीं। मगर वहां जाकर कोई फालतु कर्म नहीं करेगा ।

2- यह आदेश गुरुदेव ने 31-3-1950 को ताजे वाला में दिये।